9. दिशाहीन दिशा

PART - 1 (घर में चलते समय मन में यात्रा की .... अंतिम पडाव कन्याकुमारी हो ... ।)

1. मतलब क्या है ?

1. अंदर से धकेल रही थी – प्रेरित हो रहा था
2. आत्मीयता का अनुभव होना – अपनेपन का भाव होना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. मोहन राकेश की बडी इच्छा क्या थी ?

विशाल समुद्र-तट के साथ-साथ एक लंबी यात्रा करना

2. लेखक समुद्र-तट की यात्रा क्यों न कर न सके ?

समय और साधन की कमी से

3. लेखक ने फौरन यात्रा करने का निश्चय क्यों किया ?

नौकरी छोड देने की वजह से हाथ में पैसा आने के कारण

4. लेखक ने सीधे कहाँ चला जाने को सोचा था ?

कन्याकुमारी

5. मोहन राकेश के मित्र के विचार में --------------------

पश्चिम तट का सबसे सुंदर स्थान गोआ है ।

6. लोग गोआ जाना क्यों पसंद करते हैं ?

गोआ में खुला समुद्र-तट है,एक आदिम स्पर्श लिए प्राकृतिक रमणीयता है और वहाँ जीवन बहुत सस्ता है-रहने-खाने की हर सुविधा वहाँ बहुत थोडे पैसों में प्राप्त हो सकती है ।

7. गोआ की ज़िंदगी बहुत सस्ती है । लेखक के इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ?

लेखक के इस कथन से मैं सहमत हूँ । गोआ में रहने-खाने की हर सुविधा बहुत थोडे पैसों में प्राप्त होने से वहाँ जीवन सस्ता है ।

8. " घर में चलते समय मन में यात्रा की कोई बनी हुई रूप–रेखा नहीं थी । "– लेखक के इस कथन के आधार पर बताएँ कि किसी यात्रा पर जाने से पहले यात्रा की रूप–रेखा बनाना ज़रूरी है ?

किसी यात्रा केलिए जाने से पहले रूप–रेखा बनाना ज़रूरी है । क्योंकि कहाँ जाना है, कितने दिन रुकना है, क्या–क्या देखना है इन सबकी रूप–रेखा पहले ही तैयार नहीं की तो हम अपनी रुचि के अनुसार सब कुछ देख नहीं पाएँगे ।

9. घने शहर की छोटी–सी तंग गली में पैदा हुए लेखक को कन्याकुमारी के समुद्र–तट के प्रति आत्मीयता का अनुभव होने का आधार क्या हो सकता है ?

लेखक का जन्म शहर की छोटी–सी तंग गली होने से उनके मन में विपरीत के प्रति आकर्षण हो सकता है । छोटी गली में पैदा होने के कारण विशाल समुद्र–तट के प्रति आकर्षण होना स्वाभाविक ही है ।

10. लेखक की डायरी (लेखक ने यात्रा करने का निश्चय किया)

तारीख : ....

यात्रा करने की आशा थी । समुद्र –तट की यात्रा बहुत अच्छी है । बहुत बार सोचा था कि ऐसा एक यात्रा पर जाऊँ । लेकिन समय और साधन पास नहीं होते थे । अब इसका अवसर आ गया है । नौकरी छोडने दी तो कुछ पैसे मिले । उन पैसों से यात्रा करने का निश्चय किया । लेकिन कहाँ जाना है, क्या –क्या देखना है इन सबकी कोई रूप –रेखा ही नहीं तैयार की । पहले कन्याकुमारी जाने को सोचा था । वहाँ से गोआ या बंबई । मित्रों की भी विभिन्न रायें हैं । निर्णय तो लेना ही चाहिए ।

11. मित्र के नाम अपना पत्र – गोआ यात्रा की तैयारी

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ ।

मैं इस साल की गर्मी की छुट्टियों में गोआ जाना चाहता हूँ । बहुत समय से वहाँ जाने को सोच रहा था । पश्चिमी समुद्र-तट पर गोआ से सुंदर दूसरी जगह नहीं है । वहाँ खुला समुद्र तट है, एक आदिम स्पर्श लिए प्राकृतिक रमणीयता है । जीवन बहुत सस्ता है – रहने-खाने की हर सुविधा वहाँ बहुत थोडे पैसों में प्राप्त हो सकती है । ट्रैन में यात्रा करने का निश्चय किया है । एक हफ्ते वहाँ बिताना है । क्या तुम भी मेरे साथ आओगे ? वहाँ तुम्हारी नौकरी कैसे हो रही है ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र

(हस्ताक्षर)

नाम

सेवा में,

नाम

पता ।

12. यात्राविवरण – अपनी कन्याकुमारी यात्रा

पिछले रविवार को मैंने कन्याकुमारी की यात्रा की । पहले मैं तिरुवनंतपुरम पहुँचा । वहाँ मैंने चिडिया घर, म्यूज़ियम, हवाई अड्डा, कोवलम बीच आदि देखे । साढे बारह बजे भोजन किया । फिर दो बजे तक पद्मनाभपुरम महल देखा । साढे चार बजे को कन्याकुमारी पहुँचा । कन्याकुमारी भारत के बिलकुल दक्षिण में है । यहाँ तीन सागरों का संगम स्थान है । समुद्र के बीच चट्टान पर विवेकानंद स्मारक है । इसे देखने के बाद कन्याकुमारी देवी के मंदिर के दर्शन किए । शाम को गाँधी स्मारक देखा । इसके बाद सूर्यास्त का दृश्य देखने केलिए सागर तट पर पहुँचा । मैं सायं सात बजे तक कन्याकुमारी में बिताया । इसके बाद अपने घर की ओर लौटा । ठीक बारह बजे वापस घर पहुँचा । यात्रा का दृश्य अभी भी मन में उभर रहा है । केवल एक दुख है कि मैं वहाँ से सूर्योदय तो देख न पाया । कोई बात नहीं, अगली बार ज़रूर यह भी देखना है ।

13. टिप्पणी – यात्रा की तैयारियाँ

पहले हमें तय करना है कि निश्चित स्थान में रेलगाडी से यात्रा करना है, अन्य गाडियों से या अपनी गाडी में । रेलगाडी से यात्रा करना है तो हम टिकट रिसर्व करेंगे । अपनी गाडी लेकर जाना है तो गाडी लंबी यात्रा केलिए पक्की है, यह चेक करेंगे । आवश्यक ईंधन भरकर रखेंगे । आवश्यक कपडे लेकर बैग में रखेंगे । ठंड का मौसम है तो ऊनी कपडे भी साथ लेंगे । ब्रश, टूथपेस्ट, तौलिया आदि लेंगे । कोई बीमारी केलिए दवाइयाँ खानेवाले हैं तो साथ लेंगे । सिरदर्द, जुकाम, बुखार, अतिसार, वमन आदि केलिए आवश्यक दवाइयाँ भी लेंगे । खाना स्वयं पकाने का इरादा है तो गैस, स्टव, पकाने की वस्तुएँ आदि भी लेंगे ।

14. वार्तालाप – लेखक और अविनाश के बीच (यात्रा करने का निश्चय)

लेखक - अरे अविनाश, मैंने समुद्र-तट के साथ एक लंबी यात्रा करने का निश्चय किया है ।
अविनाश - अब फौरन यात्रा करने का क्या कारण है ?
लेखक - नौकरी छोड देने से हाथ में कुछ पैसा आ गया, इसलिए ... ।
अविनाश - कहाँ जाने की इच्छा है ?
लेखक - कन्याकुमारी तक ।
अविनाश - सीदा कन्याकुमारी जाते हो ?
लेखक - नहीं । मुंबई से होकर गोआ । वहाँ से कन्याकुमारी ।
अविनाश - कैसे जाते हो ? ट्रैन में या बस में ।
लेखक - ट्रैन में । टिकट का आरक्षण भी किया है ।
अविनाश - ट्रैन भोपाल स्टेशन से होकर जाती हो न ? स्टेशन पर तुम्हें ज़रूर मिलने आऊँगा ।
लेखक - ठीक है यार । क्या तुम भी मेरे साथ आओगे ?
अविनाश - छुट्टी मिलेगी तो अवश्य आऊँगा ।
लेखक - कोशिश करो यार । तुम भी हो तो यात्रा और भी मज़ेदार होगा ।

15. पोस्टर – कन्याकुमारी यात्रा संबंधी, ट्रावल्स द्वारा दिए गए

आएँ ! लक्षुरी कौच से यात्रा की मज़ा लें !
मुंबई – गोआ – तिरुवनंतपुरम से होकर
कन्याकुमारी यात्रा
अवधि 10 दिन
कुल रु– 10000 मात्र
(खाद्य और लोडजिंग सहित)
सारे दिन सबेरे 8 बजे अमृतसर से गाडी रवानी होगी ।
धरमवीर ट्रावल्स, अमृतसर ।
मोबाइल – 0000000000 ।

16. विवरणिका (ब्रॉशर) – गोआ की विशेषताएँ

पर्यटकों का बेस्ट डेस्टिनेशन

आदिम स्पर्श लिए प्राकृतिक रमणीयता

गोआ

* दूर तक फैला समुद्र का किनारा * मस्ती भरा माहौल

* पार्टी * एडवेंचर खेल * काजू से बनी लाजवाब फेनी

<u>दार्शनीय स्थानें</u>

* पणजी * ओल्ड गोआ
* वास्को-डा-गामा * पोंडा
* मापुसा * मारगाँव
* छापोरा * वेगाटोर
* वेनॉलिम * दूध सागर झरने
* नेशनल पार्क * अगुडा किला

हनीमून, दोस्तों के साथ व फामिली ट्रिप ऐसी छुट्टी बिताने केलिए

बेहतरीन समय – अक्तूबर से मार्च तक

<u>यातायात के मार्ग</u>

* हनाई जहाज़ के द्वारा * ट्रैन के द्वारा * रोड के द्वारा

कम से कम एक हफ्ता बिताए ... आराम से यहाँ का मज़ा लें ...

यातायात की आनंद लूटें ... जल्दी आ जाएँ गोआ ...

सबका स्वागत

PART – 2 (दिसंबर सन् बावन की पच्चीस तारीख। .... मुद्दत हुई है यार को मेहमाँ किए हुए ...।“)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. अर्ज करना – पेश करना
2. लौट चलना – वापस जाना
3. खामोश हो जाना – मौन हो होना
4. मन हो आना – इच्छा होना
5. छेड देना - प्रस्तुत करना
6. गला काफी अच्छा था – आवाज़ मीठी थी

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. बूढे मल्लाह सर्दी में क्या पहनकर नाव चलाता था ?
   तहमद
2. ताल के पास पहुँचते वक्त लेखक और मित्र को क्या इच्छा हुई ?
   भोपाल ताल में कुछ देर नाव पर सैर करने की इच्छा हुई ।
3. लेखक का मित्र अविनाश क्या करता था ?
   भोपाल से निकलनेवाले एक हिंदी दैनिक का संपादन करता था ।
4. नाव में बैठे अविनाश क्या सुनना चाहता है ?
   गाना
5. उसका गला काफी अच्छा था और सुनाने का अंदाज़ भी शायराना था । - यहाँ किसके बारे में कहते हैं?
   मल्लाह के
6. बंबई तक की यात्रा में लेखक सो नहीं सके । क्यों ?
   क्योंकि लेखक के मन में भोपाल ताल की नाव और उसके बूढे मल्लाह की गज़लें याद आ रही थीं ।
7. भोपाल स्टेशन पर कौन लेखक से मिलने आया ?
   लेखक का मित्र अविनाश
8. अविनाश क्या करता था ?
   भोपाल से निकलनेवाले एक हिंदी दैनिक का संपादक था

9. नाव यात्रा में किसने गज़लें सुनाईं ?
बूढे मल्लाह अब्दुल जब्बार ने

10. रात को कितने बजे के बाद वे घूमने निकले ?
ग्यारह

11. बूढा मल्लाह अब्दुल जब्बार लौटने को क्यों कहता है ?
सर्दी होने से

12. अविनाश ने अपना कोट उतारकर मल्लाह को दे दिया । इसकेलिए क्या–क्या कारण हैं ?
सर्दी बढ रही थी पर मल्लाह के पास चादर नहीं था । अविनाश कुछ समय और झील का सैर करना चाहता था ।

13. उसके खामोश हो जाने से सारा वातावरण ही बदल गया । वातावरण की खामोशी लेखक पर कैसा प्रभाव पडा ?
गज़लों में मग्न रहने से बाहर की दुनिया से वे कुछ समय से अनजान थे । गज़ल रुकते ही वे बाहर का वातावरण यानी रात, सर्दी, नाव का हिलना और झील का विस्तार महसूस करने लगे ।

14. भोपाल के आम जीवनी की ज़िंदगी में गज़लों का क्या रिश्ता है ?
गज़ल एक तरह का उर्दू प्रेम गीत है । गज़ल अपनी सरलता और संगीतात्मकता के कारण साधारण अनपढ लोग गज़लें पसंद करते हैं । मीठे स्वर में लय के साथ गाने लायक गज़लें सबके मन को भाती हैं । गज़लों से खूब परिचित होने से साधारण लोग भी गज़लें रटते रहते हैं । गज़ल गाते-गाते लोग एक अद्‌भुत दुनिया में पहुँच जाते हैं ।

15. ' मगर बात करने की जगह उसने मेरा बिस्तर लपेटकर खिडकी से बाहर फेंक दिया और खुद मेरा सूटकेस लिए हुए नीचे उतर गया ।' अविनाश के इस आचरण से मोहन राकेश और अविनाश के बीच की मित्रता का क्या अंदाज़ा मिल जाता है ?
इससे पता चलता है कि अविनाश और मोहन राकेश के बीच घनिष्ठ मित्रता है । अविनाश चाहता है कि उस दिन राकेश जी अपने साथ रहे । लेखक के बारे में निर्णय लेने का पूर्ण स्वतंत्रता अविनाश को था ।

16.' मगर आप चाहें तो चंद गज़लें तरन्नुम के साथ अर्ज कर सकता हूँ।' इस कथन से आम जनता के साथ गज़लों के रिश्ते का क्या परिचय मिलता है ?
गज़लों के प्रति आम जनता का लगाव ही यहाँ प्रकट होता है ।

17.' उसके खामोश हो जाने से सारा वातावरण ही बदल गया । '– इससे आपने क्या समझा ?
गज़लों में मग्न रहने से बाहर की दुनिया से लेखक और मित्र कुछ समय केलिए अनजान थे । गज़ल रुकते ही वे बाहर का वातावरण यानी रात, सर्दी, नाव का हिलना और झील का विस्तार महसूस करने लगे । किसीमें मग्न होने से हम बाहर की बातों से अनजान रहना स्वाभाविक है ।

18. मल्लाह अब्दुल जब्बार की वेशभूषा कैसी थी ?
वह सिर्फ एक तहमद पहना था। उसकी दाढी और छाती के सारे बाल सफेद हो चुके थे।

19. पटकथा - नाव में ताल यात्रा करना

स्थान –भोपाल ताल के एक नाव ।

समय – रात के साढे गयारह बजे ।

पात्र – लेखक, अविनाश और मल्लाह । (लेखक और अविनाश 50 साल के कुर्ता और पतलून पहने हैं । मल्लाह 60 साल के, सिर्फ एक तहमद पहना है ।)

घटना का विवरण – लेखक और अविनाश नाव में लेटे ताल की सवारी करने लगते हैं । तब लेखक मल्लाह से कुछ पूछने लगता है ।

संवाद -

लेखक – आधी रात को बुलाने से आपको कोई तकलीफ हुई है क्या ?
मल्लाह – क्या तकलीफ है साब ? यही तो हमारा गुज़ारा है न ?
लेखक – आपका नाम क्या है ?
मल्लाह – जी, मेरा नाम अब्दुल जब्बार है ।
लेखक – क्या आप इस ताल के पास ही रहते हो ?
मल्लाह – हाँ साब । मैं यहाँ पास ही रहता हूँ ।
लेखक – सुना है, आप जैसे मल्लाह अच्छे गायक भी हैं । क्या आप हमारेलिए एक गाना गाएँगे ?
मल्लाह – मैं गा तो नहीं सकता, हुज़ूर ।
लेखक – कोशिश तो करो यार । देखो कितना अच्छा नज़ारा है यह ! इस वक्त एक गाना भी हो तो मज़ा आता ।
मल्लाह – आप चाहें तो चंद गज़लें तरन्नुम के साथ अर्ज कर सकता हूँ, माशा अल्लाह चुस्त गज़लें हैं ।
लेखक – ज़रूर ज़रूर ! आपको जैसे आता है वैसा गाओ ।
मल्लाह – ठीक है साब ।
(मल्लाह उनकेलिए गज़लें सुनाने लगता है ।)

20. पटकथा – सर्दी बढने से मल्लाह लौटने के बारे में कहने पर

स्थान – भोपाल ताल के एक नाव ।

समय – रात के साढे गयारह बजे ।

पात्र - लेखक, अविनाश और मल्लाह ।

(लेखक और अविनाश 50 साल के कुर्ता और पतलून पहने हैं । मल्लाह 60 साल के, सिर्फ एक तहमद पहना है ।)

घटना का विवरण– लेखक और अविनाश नाव में लेटे ताल की सवारी करने लगते हैं । तब लेखक मल्लाह से कुछ पूछने लगता है ।

संवाद -

मल्लाह – अब हम लौट चलें साहब ।

अविनाश - क्यों ? क्या हुआ ?

मल्लाह – सर्दी बढ रही है न ?

अविनाश - तो क्या ?

मल्लाह – जी,मैं अपनी चादर साथ नहीं लाया ।

अविनाश - (कोट अतारकर उसकी तरफ बढाते हुए)लो,तुम यह पहन लो । अभी हम लौटकर नहीं चलेंगे ।

मल्लाह - (कोट पहनते हुए)ठीक है साहब । यही तो काफी है ।

अविनाश – तुम्हें घर जाने की कोई आवश्यकता है क्या ?

मल्लाह - नहीं साहब । आपकी सैर खतम होने पर ही मैं जाऊँगा ।

अविनाश – ऐसा हो तो तुम्हें कोई गालिब की चीज़ याद हो,तो सुनाओ ।

मल्लाह - ज़रूर साहब ।

(मल्लाह वह कोट पहनकर फिर से नाव खेने लगता है ।)

21. वार्तालाप – स्टेशन पर लेखक और मित्र अविनाश के बीच

लेखक – अरे, अविनाश तुम यहाँ? क्या बात है ?

अविनाश – कुछ नहीं । मैं तुमसे मिलने आया । बंबई तक की यात्रा में है न तुम ?

लेखक – हाँ । क्या तुम मेरे साथ आता है ?

अविनाश – नहीं । क्या यह तुम्हारा बिस्तर है ?

लेखक – हाँ, क्या है ?

अविनाश – (बिस्तर लपेटकर खिडकी से फेंककर सूटकेस लेकर बाहर उतरते हुए) आज तुम मेरे साथ भोपाल में ठहरोगे ।

लेखक – तुम्हारी इच्छा । मैं तुमसे कैसे न कहूँ यार ।

अविनाश – ठीक है । आओ मेरे साथ । कार बाहर खडी है ।

22. वार्तालाप – लेखक और टूरिस्ट गइड (किसी मन पसंद स्थान के बारे में)

लेखक - जी, क्या आप आलप्पुष़ा में रहनेवाले हैं?

गइड - हाँ । पिछले तीस वर्ष से मैं यहाँ रहता हूँ । पूछिए क्या बात है?

लेखक - आलप्पुष़ा की विशेषताएँ क्या-क्या हैं, ज़रा बताइए?

गइड - क्यों नहीं? प्रकृति की सुंदरता देखने लायक खेत हैं, नौका विहार केलिए बैकवाटर्स हैं, समुद्र-तट हैं । इसमें आपको क्या पसंद है?

लेखक - मैं तो बैकवाटर देखना चाहता हूँ ।

गइड - ऐसा हो तो हम पुन्नमटा जाएँ ।

लेखक - इन हाउस बोटों में कैसे सैर कर सकें?

गइड - यहाँ खूब सारा हाउस बोट हैं, हमें बुक्किंग करना है ।

लेखक - पूरे दिन यात्रा कर सकें ।

गइड - हाँ, चाहें तो । पूरे दिन की यात्रा और साथ ही खाना ही मिलें ।

23. अविनाश की चरित्रगत विशेषताएँ – टिप्पणी

अविनाश भोपाल ताल से निकलनेवाले हिंदी दैनिक का संपादक है । वे हिंदी के महान साहित्यकार मोहन राकेश का दोस्त हैं । अविनाश मोहन राकेश के साथ समय खर्च करने केलिए नहीं चूकते थे । रात हो या दिन वे दोस्तों के साथ रहना चाहते थे । मोहन राकेश के साथ वे भोपाल झील में सैर करते हैं । वे वातावरण के अनुसार गाना सुनने केलिए भी उत्सुक है । अविनाश दूसरों पर सहानुभूति प्रकट करते हैं । दूसरों की सहायता करने केलिए वे तत्पर हैं ।

24. मल्लाह अब्दुल जब्बार की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

मोहन राकेश के यात्रावृत्त दिशाहीन दिशा का पात्र है अब्दुल जब्बार नाम का एक बूढा मल्लाह। वह गरीब , परिश्रमी और सादा जीवन बितानेवाला व्यक्ति था। लेखक के मित्र का अनुरोध मानकर रात के ग्यारह बजे के बाद वह नाव लेकर आया। आधी रात के समय कडी सर्दी में वह केवल एक तहमद पहनकर नाव चलाया। उस शांत वातावरण में लेखक का मित्र गाना सुनना चाहे तो उसने नाव चलाते हुए एक के बाद एक करके अच्छे ग़ज़लें गाए। वह बडा विनयशील था। उसका स्वर काफी अच्छा था और सुनाने का अंदाज़ भी शायराना था। उसकी दाढी और छाती के सारे बाल सफेद हो चुके थे। बूढा होने पर भी पतवार चलाते समय उसकी मांसपेशियाँ इस तरह हिलती थीं जैसे उनमें फौलाद भरा हो। उसके गायन ने लेखक और मित्र के सैर को यादगार बना दिया।

25. मोहन राकेश की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

प्रसिद्ध लेखक मोहन राकेश यात्रा बहुत पसंद करनेवाले थे। शहर की संकरी गली में जन्म लेने से बडे-बडे पर्वत, नीलगिरी की पहाडियाँ और विशाल समुद्र-तट के प्रति उनके मन में आत्मीयता का अनुभव हुआ करते थे। उन जगहों को देखने की इच्छा से वे लंबी यात्राएँ करते थे। वे दोस्तों के प्यारे थे। उनका प्रभाव दोस्तों को अपनी ओर आकर्षित करता था। प्रकृति की गोद में चलना पसंद करनेवाले मोहन राकेश ऐसी जगहें चुनकर वहाँ की सैर करते थे। पाठभाग में भी इसका ज़िक्र है। कन्याकुमारी की यात्रा करना उनका चाह था। पर समय और साधन की कमी से पहले यात्रा न कर सके। नौकरी छोड देने से हाथ में पैसे आने पर फौरन करने का निश्चय करते हैं। यात्रा के बीच मित्र के अनुरोध पर यात्रा बंद करके उसके साथ रुककर रात को भोपाल ताल की सैर केलिए भी निकलते हैं। नाव में लेटे, गज़लें सुनते हुए वे उस ताल यात्रा को यादगार बना देते हैं। इन सब बातों से यात्रा के प्रति उनकी रुचि हम देख सकते हैं।

26. अविनाश की डायरी (नाव यात्रा)

तारीख : ....

आज मैं भोपाल स्टेशन पर मित्र मोहन राकेश से मिलने गया। मैं उसका सूटकेस लेकर बाहर उतरने से उसको एक रात मेरे साथ रहना पडा। रात को ग्यारह बजे के बाद हम घूमने निकले। झील के पास आते ही नाव पर झील की सैर करने का मन हुआ। नाव पर सैर करते वक्त बूढे मल्लाह ने कुछ गज़लें सुनाईं। हम उस मीठी आवाज़ में मग्न होकर आगे बढे। रात के साथ ठंड भी बढने लगी तो मैंने मल्लाह को अपनी कोट उतारकर दे दी। पूरी रात हम गज़लें सुनते हुए, नाव में लेटे हुए झील की सैर करते रहे। कितनी मज़ेदार यात्रा थी। जीवन का यह पहला अनुभव था।

27. अविनाश का पत्र

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ।

कल मैं भोपाल स्टेशन पर मित्र मोहन राकेश से मिलने गया। एक रात मेरे साथ रहने का निश्चय किया। रात को ग्यारह बजे के बाद हम घूमने निकले। भोपाल ताल के पास आते ही नाव लेकर झील की सैर करने की इच्छा हुई। नाव पर सैर करते हुए आगे बढते समय मेरे अनुरोध पर मल्लाह ने गज़लें सुनाईं। हम उस मीठी आवाज़ में मग्न होकर खामोश रहे। रात के साथ ठंड भी बढने लगी तो मैंने मल्लाह को अपनी कोट उतारकर दे दी। पूरी रात हम गज़लें सुनते हुए नाव में लेटे झील की सैर करते रहे। कितनी मज़ेदार अनुभव था बता नहीं सकती। अब भी मल्लाह की गज़लें कानों में गूँज रही हैं।

वहाँ तुम्हारी नौकरी कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता।

28. अविनास की डायरी (गज़ल)

तारीख: ....

आज रात को मैंने अपने मित्र मोहन राकेश के साथ नाव लेकर भोपाल ताल की यात्रा की। नाव का मल्लाह था अब्दुल जब्बार। सर्दी में भी वह केवल एक तहमद पहनकर नाव खे रहा था। मेरे अनुरोध पर मल्लाह ने गज़ल गाना शुरू किया। कितना मीठा था उनका स्वर ! सुनाने का अंदाज़ भी शायराना था। नाव खेते हुए वे झूम-झूमकर अत्यंत भावुकता से गज़लें सुना रहे थे। उसके गायन ने हमें किसी दूसरी दुनिया में पहुचा दिया। रात की चाँदनी, सर्दी, शांत वातावरण, झील की विशालता आदि के साथ मल्लाह की गज़लें यात्रा को और भी आकर्षक बना दिया। सर्दी बढने पर मल्लाह ने लौटने की इच्छा प्रकट की तो मैंने अपना कोट उतारकर उसको दे दिया। उस कोट पहनकर फिर उसने गालिब की एक गज़ल भी सुनाई। कुछ देर और सैर करके ही हम लौटे। मित्र केलिए यह यात्रा एक अलग अनुभव ही था। मल्लाह की गज़लें अब भी कानों में गूँज रही हैं। आज की यह अविस्मरणीय नाव यात्रा और मल्लाह की गज़लें जीवन भर मन में रहेगा।

29. अविनाश का पत्र (गज़ल)

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ ।

कल रात को मैंने अपने मित्र मोहन राकेश के साथ नाव लेकर भोपाल ताल की यात्रा की । नाव का मल्लाह था अब्दुल जब्बार । सर्दी में भी वह केवल एक तहमद पहनकर नाव खे रहा था । मेरे अनुरोध पर मल्लाह ने गज़ल गाना शुरू किया । कितना मीठा था उनका स्वर ! सुनाने का अंदाज़ भी शायराना था । नाव खेते हुए वे झूम-झूमकर अत्यंत भावुकता से गज़लें सुना रहे थे । उसके गायन ने हमें किसी दूसरी दुनिया में पहुचा दिया । रात की चाँदनी, सर्दी, शांत वातावरण, झील की विशालता आदि के साथ मल्लाह की गज़लें यात्रा को और भी आकर्षक बना दिया । सर्दी बढने पर मल्लाह ने लौटने की इच्छा प्रकट की तो मैंने अपना कोट उतारकर उसको दे दिया । उस कोट पहनकर फिर उसने गालिब की एक गज़ल भी सुनाई । कुछ देर और सैर करके ही हम लौटे । मित्र केलिए यह यात्रा एक अलग अनुभव ही था । मल्लाह की गज़लें अब भी कानों में गूँज रही हैं । कल की यह अविस्मरणीय नाव यात्रा और मल्लाह की गज़लें जीवन भर मन में रहेगा ।

वहाँ तुम्हारी नौकरी कैसे हो रही है ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

30. लेखक की डायरी (गज़ल)

तारीख: ……………….

आज रात को मैंने अपने मित्र अविनाश के साथ नाव लेकर भोपाल ताल की यात्रा की । नाव का मल्लाह था अब्दुल जब्बार । सर्दी में भी वह केवल एक तहमद पहनकर नाव खे रहा था । मित्र के अनुरोध पर मल्लाह ने गज़ल गाना शुरू किया । कितना मीठा था उनका स्वर ! सुनाने का अंदाज़ भी शायराना था । नाव खेते हुए वे झूम-झूमकर अत्यंत भावुकता से गज़लें सुना रहे थे । उसके गायन ने हमें किसी दूसरी दुनिया में पहुचा दिया । रात की चाँदनी, सर्दी, शांत वातावरण, झील की विशालता आदि के साथ मल्लाह की गज़लें यात्रा को और भी आकर्षक बना दिया । सर्दी बढने पर मल्लाह ने लौटने की इच्छा प्रकट की तो मित्र ने अपना कोट उतारकर उसको दे दिया । उस कोट पहनकर फिर उसने गालिब की एक गज़ल भी सुनाई । कुछ देर और सैर करके ही हम लौटे । मेरेलिए यह यात्रा एक अलग अनुभव ही था । मल्लाह की गज़लें अब भी कानों में गूँज रही हैं । आज की यह अविस्मरणीय नाव यात्रा और मल्लाह की गज़लें जीवन भर मन में रहेगा ।

31. लेखक का पत्र (मल्लाह की गज़ल)

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ ।

कल रात को मैंने अपने मित्र अविनाश के साथ नाव लेकर भोपाल ताल की यात्रा की । नाव का मल्लाह था अब्दुल जब्बार । सर्दी में भी वह केवल एक तहमद पहनकर नाव खे रहा था । मित्र के अनुरोध पर मल्लाह ने गज़ल गाना शुरू किया । कितना मीठा था उनका स्वर ! सुनाने का अंदाज़ भी शायराना था । नाव खेते हुए वे झूम-झूमकर अत्यंत भावुकता से गज़लें सुना रहे थे । उसके गायन ने हमें किसी दूसरी दुनिया में पहुचा दिया । रात की चाँदनी, सर्दी, शांत वातावरण, झील की विशालता आदि के साथ मल्लाह की गज़लें यात्रा को और भी आकर्षक बना दिया । सर्दी बढने पर मल्लाह ने लौटने की इच्छा प्रकट की तो मित्र ने अपना कोट उतारकर उसको दे दिया । उस कोट पहनकर फिर उसने गालिब की एक गज़ल भी सुनाई । कुछ देर और सैर करके ही हम लौटे । मेरेलिए यह यात्रा एक अलग अनुभव ही था । मल्लाह की गज़लें अब भी कानों में गूँज रही हैं । कल की यह अविस्मरणीय नाव यात्रा और मल्लाह की गज़लें जीवन भर मन में रहेगा ।

वहाँ तुम्हारी नौकरी कैसे चल रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

32. मोहन राकेश की डायरी (नाव यात्रा)

तारीख: ....

आज मेरेलिए कैसा दिन था, बता नहीं सकता। आज मैं कन्याकुमारी की यात्रा में था। भोपाल स्टेशन पहुँचने पर मेरा मित्र मुझे मिलने आया और उसके साथ एक रात रहने का निश्चय किया। रात को ग्यारह के बाद हम घूमने निकले। झील के पास आते ही कुछ देर नाव लेकर झील की सैर करने की इच्छा हुई। एक नाव मिल गई। नाव में बैठे यात्रा का मज़ा लूट रहा था। तभी मित्र के अनुरोध पर मल्लाह ने हमारेलिए कुछ गज़लें सुनाईं। कितना मीठा था उनका स्वर। रात के साथ ठंड बढने लगी। लेकिन लौटने का मन नहीं हुआ। इसलिए मित्र ने अपना कोट उतारकर उसको दिया। कुछ देर फिर सैर की। चार बजे ही लौटे। आज की यह मज़ेदार नाव यात्रा मैं कैसे भूलूँ?

33. यात्रा के बारे में लेखक का पत्र

स्थान: ....

तारीख.....................................

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो? कुशल हो न? वहाँ तुम्हारी क्या-क्या समाचार हैं? मैं अब मित्र अविनाश के साथ भोपाल में हूँ। सकुशल मैं यहाँ पहुच गया।

स्टेशन पर मेरे मित्र अविनाश आया था। एक दिन उसके साथ रहने का निश्चय किया। रात को हमने झील की सैर करने को सोचा। ग्यारह बजे निकले। एक नाव मिल गई। उसमें घूमने लगे। बहुत-ही सुंदर लग रही थी। तभी अविनाश की इच्छा हुई कि कोई कुछ गाए। मैं गा नहीं सकता था। आखिर मल्लाह गाने को तैयार हुए। वे कुछ गज़लें सुनाने लगे। बहुत मीठा था उनका स्वर। रात के साथ ठंड भी बढने लगी। लेकिन लौटने का मन नहीं हुआ। कुछ देर फिर सैर की। चार बजे ही लौटे।

अगली बार तुम भी मेरे साथ आओ। ऐसी यात्राएँ बहुत ही आकर्षक होती है। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

34. मल्लाह की डायरी (लेखक के साथ ताल यात्रा)

कल रात को ग्यारह बजे के बाद लेखक मोहन राजेश और उनके मित्र को भोपाल ताल की सैर केलिए नाव में ले गया। सैर करके आगे बढने पर लेखक का मित्र गाना सुनना चाहा तो मैंने उनकेलिए कुछ गज़लें सुनाईं। सर्दी बढती जा रही थी। मेरे शरीर पर केवल एक तहमद ही था। इसलिए कुछ समय के बाद मैंने उनसे वापस जाने का अनुरोध प्रकट किया। क्योंकि मेरे पास ओढने को चादर नहीं था। उस समय लेखक के मित्र ने अपना कोट उतारकर मुझे दिया। मैंने उसे पहनकर पूरी रात नाव चलाया। उन्हें यात्रा बहुत मज़ा आया। जाते समय वे मुझे कुछ ज़्यादा पैसा भी दिए। यह भी बताया, अगली बार आने पर वे ज़रूर मुझे ही बुलाएँगे।

35. मल्लाह का पत्र

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं अब यह पत्र भेज रहा हूँ।

कल रात को ग्यारह बजे के बाद लेखक मोहन राजेश और उनके मित्र को भोपाल ताल की सैर केलिए नाव में ले गया। सैर करके आगे बढने पर लेखक का मित्र गाना सुनना चाहा तो मैंने उनकेलिए कुछ गज़लें सुनाईं। सर्दी बढती जा रही थी। मेरे शरीर पर केवल एक तहमद ही था। इसलिए कुछ समय के बाद मैंने उनसे वापस जाने का अनुरोध प्रकट किया। क्योंकि मेरे पास ओढने को चादर नहीं था। उस समय लेखक के मित्र ने अपना कोट उतारकर मुझे दिया। मैंने उसे पहनकर पूरी रात नाव चलाया। उन्हें यात्रा बहुत मज़ा आया। जाते समय वे मुझे कुछ ज़्यादा पैसा भी दिए। यह भी बताया, अगली बार आने पर वे ज़रूर मुझे ही बुलाएँगे।

वहाँ तुम्हारी नौकरी कैसे चल रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम